हृदय की प्रेरणा

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्कथित एक कहानी

रविवार, ११ मई, २०१९ को एस. वाई. डी. ए. फ़ाउन्डेशन ने मातृ-दिवस व 'चित्शक्ति विलास' की पचासवीं वर्षगाँठ के सम्मान में श्रीगुरुमाई के साथ सीधे विडिओ प्रसारण द्वारा एक सत्संग का आयोजन किया। गुरुमाई जी ने इस सत्संग को जो शीर्षक प्रदान किया, वह है : "प्रेम शाश्वत है।"

इस सत्संग में एक के बाद एक सुन्दर क्षण पिरोए हुए थे और जो लोग इसमें भाग ले रहे थे उन्होंने बाद में बताया कि उनके लिए इस सत्संग का अनुभव कितना गहन व रूपान्तरणकारी रहा — किस प्रकार गुरुमाई जी की कृपा ने, गुरुमाई जी की सिखावनियों ने, गुरुमाई जी के संगीत ने उनके हृदय के चारों ओर बनी दीवारों को बेध दिया, जिससे प्रेम, *शाश्वत* प्रेम, जलधारा के समान उनकी सत्ता में प्रवाहित हो सके। जब श्रीगुरुमाई की अत्यन्त सुन्दर कविता, 'एक माँ का अभिमान' पढ़ी गई तो श्री निलय में शायद ही कोई होगा जिसकी आँखें नम न हुई हों।

इस सत्संग के दौरान एक ऐसा क्षण उभरकर आया जो विशिष्ट रूप से गुरु-शिष्य के सम्बन्ध का प्रतीक था और देने व प्राप्त करने के उस चक्र का भी जो इस सम्बन्ध को सम्बल प्रदान करता है। इस प्रसंग में शिष्य था, सत्रह महीना का एक बच्चा। वह अपनी माँ के साथ श्री निलय में बैठा हुआ था, गुरुमाई जी के ठीक सामने।

सत्संग समाप्ति की ओर था और कार्यक्रम के सूत्रधार, एसा सीगल सत्संग समापन कर रहे थे, जब यह बच्चा उठकर खड़ा हो गया। उसके नन्हे-नन्हे पैर निस्सन्देह अभी भी उसके शरीर को सीधा रखना सीख रहे थे — उसकी असीमित ऊर्जा को, उसके उत्साह को सँभालना सीख रहे थे।

फिर भी उस बच्चे के हावभाव में एक निश्चितता थी जब वह पास बैठी एक युवति के नज़दीक गया और उनके हाथों की चूड़ियों को हल्के-से खींचने लगा। आख़िर, उन महिला की सहायता और उनकी सहर्ष सहमति से उसने उनके हाथ से एक चूड़ी उतार ली और उसे अपना मान लिया।

उसी क्षण, उस बच्चे ने गुरुमाई जी की ओर देखा। और गुरुमाई जी ने भी उसकी ओर देखा, इतनी प्रेम भरी दृष्टि से कि महीनों और शायद वर्षों बाद भी उसकी स्मृति-मात्र ही मन छू लेगी।

फिर वह छोटा बच्चा अपने हाथ को आगे बढ़ाते हुए, अपनी उंगलियों से चूड़ी को कसकर पकड़े, गुरुमाई जी की ओर बढ़ा और उन्हें अपनी भेंट अर्पित की।

ध्यान देने वाली बात है कि इस बच्चे को अभी श्रीगुरु को भेंट अर्पित करना नहीं सिखाया गया था। परन्तु जब उसके नन्हें कानों ने मातृ-दिवस के सम्मान में गुरुमाई जी की कविता सुनी, जब उसने बाबा मुक्तानन्द द्वारा 'चित्शक्ति विलास' के लिखे जाने के बारे में स्वामी ईश्वरानन्द को बोलते हुए सुना, जब वह नामसंकीर्तन के सुमधुर राग में सरोबार हुआ और जब वह श्रीगुरुमाई के, संघम् के सानिध्य में आनन्दित हो रहा था तब अन्तर-जागृति के उस क्षण में, उसे एक ऐसे ज्ञान ने निर्देशित किया जो अन्तर्जात था। वह जानता था कि उसे खुद को समर्पित करना है; वह जानता था कि उसे श्रीगुरुमाई को भेंट अर्पित करनी है ताकि उस प्रेम को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया जा सके जो उसके अन्दर से प्रवाहित हो रहा था। और इसलिए उसने वह चूड़ी आगे बढ़ाई।

उस क्षण में उम्र के कोई मायने नहीं थे। वह छोटा-सा बच्चा अपने हृदय के आदेश का, उसकी प्रेरणा का पालन कर रहा था।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।